International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

जनजातीय महिलाओं के सहभागिता के बिना राष्ट्र निर्माण की अवधारणा अधूरी : एक अवधारणात्मक विश्लेषण। झारखण्ड राज्य के विशेष सन्दर्भ में

डॉ सुबोध प्रसाद रजक

पीएच.डी. (बी.एच.यू., वाराणसी) सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, गोड्डा कॉलेज, गोड्डा झारखण्ड–814133

ABSTRACT

विविधता में एकता, सामाजिक–सांस्कृतिक सहिष्णुता, धार्मिक सद्भाव एवं भाषायी बंधुता की भावना राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया को सशक्त, सफल एवं सार्थक बनाती है। भारत की भौगौलिक विविधताओं, भाषायी एवं सास्कृतिक बहुलताओं को संपूर्ण सम्मान एवं राष्ट्रीय स्वीकार्यता के साथ एकता में सूत्रों में पिरोने का कार्य राष्ट्र निर्माण की प्रगतिशील एवं समावेशी प्रक्रिया करती है। राष्ट्र की आधी आबादी अर्थात नारियों के सहभागिता के बिना राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया भी अधूरी ही रहेगी। इस आधी आबादी का एक अहम् हिस्सा आदिवासी जनजातीय महिलाओं का है। आदिवासी जनजातीय महिलायें जिन्होंने आदिकाल से नारी सशक्तिकरण की दिशा में, स्वच्छ, स्वस्थ, सुन्दर व प्रकृति प्रेमी मानव समाज के निर्माण में, अन्यायी अत्याचारी व शोषणकारी अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध हुए आन्दोलनों में सक्रिय एवं प्रभावशाली भूमिका निभाई है।

राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया बहुआयामी प्रकृति की होती है, जिसके राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक व पर्यावरणीय आदि आयाम होते हैं। झारखण्ड के आदिवासी जनजातीय महिलाओं ने 1855 के संताल विद्रोह, 1900 के बिरसा आन्दोलन में सशस्त्र संघर्ष करके एवं 1914–15 के तानाभगत आन्दोलन में अहिंसक व शांतिपूर्ण प्रतिरोध में अपनी सशक्त व प्रभावी उपस्थिति दर्ज कर राष्ट्र–निर्माण की वैचारिकी के साथ–साथ उसके व्यवहारिक अमलीकरण को सार्थक एवं संभव बनाया।

आर्थिक लहजे में आत्मनिर्भरता की संकल्पना को एवं देशज उत्पाद उपयोग करने की अवधारणा को आदिवासी जनजातीय महिलाओं के घरेलु आर्थिकी एवं जीवन प्रणाली ने सार्थक किया है। जनजातीय महिलाओं के प्रकृति प्रेमी एवं प्राकृतिक अलंकरण की परिपाटी ने राष्ट्र–निर्माण के पर्यावरणीय पक्ष को मजबूती दी है। उनके जीवन की सरलता, सहजता एवं सहयोग की भावना ने राष्ट्र निर्माण के विश्व बंधुत्व की परम्परा को बढ़ावा दिया है। साहित्यिक दृष्टिकोण से आज आदिवासी–विमर्श भी आदिवासी जनजातीय महिलाओं के समस्याओं एवं संवेदनाओं को मुख्यधारा के साहित्य से जोड़कर राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को गति प्रदान कर रही है। प्रस्तुत शोध पर हम बेहद बारीकी से राष्ट्र निर्माण के विविध आयामों को झारखण्ड के आदिवासी जनजातीय महिलाओं के विविध पक्षों के संर्दभो में समझने का प्रयास करेंगे एवं साथ ही राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न आयामों को सशक्त एवं सफल करने की दिशा में जनजातीय महिलाओं की भूमिकाओं को भी रेखांकित करेंगे।

कुंजी शब्द :– राष्ट्र–निर्माण, जनजातीय, महिला, सशक्तीकरण, आदिवासी– विमर्श, प्रकृति प्रेमी।

भूमिका :–

राष्ट्र–निर्माण की अवधारणा एक बहुआयामी अवधारणा है, जिसके आध्यात्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय आदि आयाम होते हैं। भारत में राष्ट्र निर्माण की संकल्पना को सफलीभूत करने के लिए आवश्यक है कि हम सबसे पहले भारत माता की अवधारणा को समझें। "कौन है भारत माता?" संकल्पना को समझे और इस संदर्भ में देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के विचार अति महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण है। नेहरू के शब्दों में "यह भारत माता कौन है, जिसकी जय आप देखना चाहते हैं? 1936 की एक सार्वजनिक सभा में जवाहर लाल नेहरू ने लोगों से यह सवाल पूछा। फिर उन्होंने कहा "बेशक ये पहाड़ और नदियाँ, जंगल और मैदान सबको बहुत प्यारे हैं, लेकिन जो बात जानना सबसे जरूरी है, वह यह है कि इस विशाल भूमि में फैले भारतवासी सबसे ज्यादा मायने रखते हैं। भारत माता यही करोड़ों करोड़ जनता है और भारत माता की जय उसकी भूमि पर रहने वाले इन सब की जय है।"

भारत का आदिवासी जनजातीय समाज भी भारत माता की इसी जय की परिभाषा में शामिल है।

भारत माता :– भारत की स्वतंत्रता संग्राम के मूल्यो, विश्वासों एवं भारत के संविधान की प्रास्तावना के आदर्शो एवं उद्येश्यों के आधार पर साहित्यिक लहजे में भारत माता को निम्न पंक्तियों में परिभाषित किया जा सकता है।

- ✓ भारत माता कोई मूर्त्ति या तस्वीर नहीं है, जिसे किसी मंदिर या मस्जिद में ढूंढा जाय।
- ✓ भारत माता भारत भूमि के प्रति ममत्व की भावना है।
- ✓ भारत भूमि में रहनेवाले आवाम के प्रति अपनत्व की भावना है।
- ✓ भारत भूमि में विद्यमान सामाजिक, धार्मिक व भाषायी विविधता के प्रति सच्ची श्रद्धा व सच्चा सम्मान है।
- ✓ भारत भूमि में व्याप्त सांस्कृतिक विविधता के प्रति सांस्कृतिक चेतना व सहिष्णुता की भावना है।
- ✓ भारत माता भारत भूमि के भौगोलिक आकार से परे अनेकता में एकता एवं बंधुत्व का मूलमंत्र है।

अगर हम एक जीवंत–जिन्दादिल, अखण्ड व अदभूत भारत का निर्माण करना चाहते हैं तो हमें बगैर किसी विवाद के सच्चे हृदय से भारत माता के चरणों में झुकते हुए बुलन्द आवाज में कहना होगा।

भारत माता की जय! भारत माता की जय!

आध्यात्मिक अर्थों में राष्ट्र–निर्माण की अवधारणा का अर्थ है, भारत भूमि में रहने वाले प्रत्येक भारतीय को आध्यात्मिक दृष्टि से भारत माता से जोड़ना। भारत माता को परम आत्मा मानते हुए प्रत्येक भारतीय के आत्मा को उस परमात्मा से एकाकार होने में प्रत्येक भारत के लोगों का आत्मिक उत्थान होगा। महर्षि अरविन्द घोष जैसे विद्वानों ने इसी आध्यात्मिक आधार पर राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया को एक नयी दिशा दी। सामाजिक संदर्भों में राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया का अर्थ है, देश के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व भाषायी विविधता एवं बहुलता के प्रति सम्मान, सदभाव एवं सहिष्णुता की भावना विकसित कर धर्मनिरपेक्षता का अमलीकरण है। गाँधीजी के शब्दों में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ है, "सर्वधर्म सम्भाव।"

भारत की समझ :– प्रसिद्ध इतिहासकार रामचन्द्र गुहा ने अपनी पुस्तक ''India After Gandhi'' के प्रथम अध्याय का आरंभ इस सवाल से ही किया है कि हमें भारत पर बात या चर्चा क्यों करनी चाहिए। (Why their should be an India I talk). इस प्रश्न के उत्तर में रामचन्द्र गुहा कहते हैं, भारत केवल मात्र एक भौगोलिक विस्तार का नाम नहीं है, भारत एक कल्पना का, भारत एक आदर्श का, भारत एक मूल्य का, भारत एक विचार का नाम है और हमें इस गूढ़ विचारों को समझना होगा। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा ''An Authobiography also known as Towards Freedom (1936)'' में लिखा है–– ''भारत एक सांस्कृतिक इकाई है।''

राजनीतिक अर्थों में राष्ट्र–निर्माण के सफलीभूत होने का अनिवार्य शर्त्त है, भारत में समावेशी लोकतंत्र के सभी स्तंभों, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक लोकतंत्र को मजबूत करना। आर्थिक अर्थों में राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया के जरूरी शर्त्तों में अर्थायाम, अंत्योदय एवं समाज के अंतिम व्यक्ति के आँख के आंसु पोंछने से लिया जाता है।

राष्ट्र–निर्माण एवं राज्य–निर्माण :– हमें राष्ट्र निर्माण की संकल्पना को समझने के लिए राज्य–निर्माण की संकल्पना को भी समझना होगा। क्योंकि राष्ट्र–राज्य की अवधारणा दोनों से ही जुड़ी हुई है। राज्य–निर्माण की अवधारणा मूलतः भौगोलिक एवं राजनीतिक अवधारणा है, जिसे शक्ति, सत्ता एवं संप्रभुता के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। जबकि राष्ट्र–निर्माण की अवधारणा में सांस्कृतिक, आध्यात्मिक व भावनात्मक आयाम शामिल है।

जनजातीय महिलाओं का जनसांख्यिकीय परिचय :– भारत की जनगणना, 2011 के रिपोर्ट के अनुसार भारत में कुल 5.20 करोड़ जनजातीय महिलाएँ हैं, जो भारत की कुल महिलाओं का 8.86 प्रतिशत है। साक्षरता दर की बात की जाय तो जनजातीय महिलाओं में साक्षरता दर 49.40 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय महिला साक्षरता दर 64.60 प्रतिशत से काफी कम है। लेकिन श्रम शक्ति में इनकी भागीदारी 39.6 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय स्तर पर कुल महिलाओं की औसत भागीदारी 25.1 प्रतिशत से ज्यादा है।

राष्ट्र–निर्माण में झारखण्ड के आदिवासी जनजातीय महिलाओं के योगदानों का सिंहावलोकन :– कतिपय इतिहासकारों एवं राजनीतिक सिद्धांतकारों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि भारत में राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया का प्रारंभ अंग्रेजों के शोषणकारी शासन व्यवस्था, आततायी एवं अत्याचारी नीतियों से हुआ है और भारत में राष्ट्र–निर्माण का मूर्त रूप हमें अंग्रेजों के खिलाफ होने वाले विद्रोहों में मिलता है। वीर सावरकर के शब्दों में "1857 का विद्रोह भारत का प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन था।" लेकिन हमें मालूम होना चाहिए कि 1857 के सिपाही विद्रोह से पहले ही कतिपय जनजातीय आन्दोलन हुए। जिसने क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्य में ही सही लेकिन अंग्रेजी सत्ता को सशस्त्र चुनौती दी अपनी जल, जंगल, जमीन, संस्कृति व परम्परा की रक्षा के लिए। इन सशस्त्र जनजातीय संघर्षों में आदिवासी जनजातीय महिलाओं की सक्रिय व प्रभावशाली भागीदारी रही है। इन संघर्षों में जनजातीय महिलाएँ पुरूषों के साथ कदमताल करती नजर आयी है। इसका एक बड़ा कारण था, जनजातीय समाजों का कहीं मातृप्रधान होना तो कहीं जेंडर समानता की बात होना है। 1855 के संताल विद्रोह (हूल आन्दोलन) ने मानो ब्रिटिश सत्ता के जड़ों पर गहरी चोट की थी। इस विद्रोह में दो विरंगना बहनों फूलो–झानो के भूमिका ने मानो नारी

शक्ति एवं संगठन क्षमता को राष्ट्र–निर्माण में जनजातीय महिलाओं की भूमिका को प्रमाणित कर दिया। उनके ओजस्वी विचार एवं नेतृत्व क्षमता ने भारतीय जनजातीय नारी शक्ति को एक नई ऊँचाई दी।

झारखण्ड के आदिवासी जनजातीय महिलाओं ने सदियों से अपने सामुदायिक नेतृत्व क्षमता का परिचय दिया है। सामुदायिक नेतृत्व की यह परम्परा सिनगीदई से लेकर भारत के प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू तक दिखती है।

सिनगीदई ने चम्पू दई और कईली देई के नेतृत्व में मध्यकाल में ही पूरी क्षमता व साहस के साथ तुर्क–पठानों का मुकाबला किया था। पड़हा राजा की बेटी सिनगीदई ने रोहतासगढ़ के किले की रक्षा करने के लिए पारम्परिक हथियारों के जरिये महिलाओं को साथ लेकर युद्ध रणनीति बनाई थी। आदिवासी लेखक सुनील मिंज ने अपनी पुस्तक 'सिनगीदई' में लिखा है, उराँव महिलाओं ने सिनगीदई, चम्पूदई और कईलीदई के नेतृत्व में तीन बार विजय प्राप्त की थी।

भारत में अंग्रेजी राज स्थापित होने के पश्चात कई आन्दोलन व विद्रोह आदिवासी क्षेत्रों में हुए। इन आन्दोलन एवं विद्रोहों में आदिवासी महिलाओं ने अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज करायी थी। झारखण्ड के प्रथम स्वतंत्रता सेनानी तिलका मांझी के नेतृत्व में चले विद्रोह में फूलमनी मझिआईन ने भी अंग्रेजी साम्राज्य का मुकाबला किया। 1831 के कोल विद्रोह के समय सिंगराय बहनों ने अपनी साहस एवं निडरता को प्रमाणित किया था। 30 जून 1855 को भोगनाडीह में सिद्धो–कान्हू, चाँद–भैरव के नेतृत्व में संताल विद्रोह का आगाज किया गया था। इस विद्रोह में सिद्धो–कान्हू की दो बहनों फूलो एवं झानो ने अपने विचार, भाषण एवं संगठन क्षमता से आन्दोलनकारियों के ओज एवं उत्साह को निरन्तर बनाये रखने का कार्य किया। उन्होंने हथियार एवं रसद प्रबंध के कार्य को बड़ी कुशलता से किया। 21 अंग्रेजों को मारकर फूलो एवं झानो ने अपने पराक्रम का परिचय दिया।

इतिहास प्रसिद्ध बिरसा मुण्डा के आन्दोलन में जनजातीय महिलाओं ने अपने अधिकार, सांस्कृति, सम्मान व अस्मिता की रक्षा के लिए विश्व के सबसे बड़े साम्राज्यवादी सरकार का पूरे साहस के साथ सामना किया। बिरसा मुण्डा के सहयोगी गया मुण्डा की पत्नी माकी मुण्डा एवं उनके दोनों बेटियों के पराक्रम एवं साहस को, अपने माटी की रक्षा के लिए मर मिटने के जज्बात को इतिहास कैसे भूला सकता है।

सन् 1930 के नमक सत्याग्रह के समय खूँटी के टाना भगतों की सभा में आधी से ज्यादा संख्या महिलाओं की थी। सन् 1930 के दशक में चाईबासा की सुशीला सामत कविताएँ लिखने के साथ–साथ महिलाओं में शिक्षा और जागृति के लिए महिला समिति का गठन किया था। बाद के वर्षों में उन्होंने साहित्यिक, राजनीतिक पत्रिका "चाँदनी" के प्रकाशन–संपादन की भी जिम्मेदारी ली। कविता जगत में उन्हें प्रथम आदिवासी महिला हिन्दी कवयित्री और प्रथम आदिवासी महिला संपादक होने का भी गौरव प्राप्त है।

ऐंजलिना तिग्गा को प्रथम महिला आदिवासी सांसद हाने का गौरव प्राप्त है। राज्य सभा में उन्होंने झारखण्डी अस्मिता एवं आदिवासी समस्याओं को लेकर काफी संवेदनशील रही। झारखण्ड आन्दोलन को कई दशकों तक सफलतापूर्वक चला, इसमें महिला नेत्रियों ने भी बढ़–चढ़कर भाग लिया, उनमें प्रमुख हैं–प्रखर वक्ता और राजनीतिकार माल्ती किंचिम्य, शकुन्तला टुडू, ज्योत्सना तिर्की, मरियम चेरोबा, लाडो जोको, नंदी कुई रोज केरकट्टा आदि। रोज केरकट्टो जो हिन्दी की वरिष्ठ कथाकार और 'आधी दुनिया' पत्रिका की संपादक रही है, जिन्होंने अपनी लेखनी से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक संकटों से समाज को साक्षात्कार कराया।

सन् 1970 के दशक से चलने वाले कोयलकारों आन्दोलन और सन् 1990 के दशक का नेतरहाट आन्दोलन में भी आदिवासी जनजातीय महिलाओं ने अपनी सहभागिता और एकजुटता दिखाई है। वर्त्तमान झारखण्ड के स्थानीय स्वशासन के विभिन्न स्तरों पर जनजातीय महिलाओं के प्रशंसनीय कार्य एवं सराहनीय नेतृत्व क्षमता, ईमानदारीपूर्वक योजनाओं का क्रियान्वयन आदि बातें प्रत्यक्ष–परोक्ष रूप से राष्ट्र–निर्माण में उनकी भूमिका को रेखांकित करती है। राज्य विधान–सभा में उनके तर्कपूर्ण एवं अर्थपूर्ण बहस भी देश के लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करती है। देश के अंतिम व्यक्ति से अपने जीवन यात्रा प्रारंभ करने से लेकर देश के प्रथम नागरिक की भूमिका में आने तक का यात्रा–वृतांत देश के समावेशी लोकतंत्र को स्थापित करती है। देश के प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू।

राष्ट्र–निर्माण, पर्यावरण, शिक्षा एवं साहित्य :– आदिवासी महिलाओं के लिए निरंतर शिक्षा, स्वास्थ, आर्थिक आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया से उन्हें जोड़ने के लिए, उनके उत्थान के लिए व्यक्तिगत प्रयास के साथ–साथ सांगठनिक स्तर पर "आदिवासी महिला संघ" के माध्यम से करने वाली हीराबाई इब्राहिम लोबी के योगदानों को कैसे भुलाया जा सकता है, जिन्हें 2023 में पदम्श्री से सम्मानित किया गया। सम्मान समारोह में उनके शब्दों ने सिद्दी आदिवासी समुदाय के सरलता, सहजता, समर्पण व श्रद्धा को प्रमाणित कर दिया। "आपने हमारी झोली खुशियों से भर दी।"

जंगल का विश्वकोष समझी जानेवाली, वनस्पति शास्त्र का चलती– फिरती पाठशाला तुलसी गौड़ा के पर्यावरण व पारिस्थितिक संतुलन में योगदानों से पूरा विश्व वाकिफ है, जिन्हें 2021 में पदम्श्री सम्मान से सम्मानित किया गया।

- **जमुना टुडू** :– जमुना टुडू लंबे समय से झारखण्ड में पर्यावरण को बचाने, रक्षा करने के लिए प्रयासरत है। वन सुरक्षा समिति (1998) के माध्यम से वह निरंतर झारखण्ड के जल, जंगल व जमीन की रक्षा कर रही है। वह झारखण्ड के जंगलों का बचाने के लिए इस सीमा तक संघर्षरत, समर्पित व प्रसिद्ध हैं कि उसे झारखण्ड का 'लेडी टार्जन' कहा जाता है। उनके इस प्रयास व प्रतिबद्धता को सम्मानित करते हुए भारत सरकार ने वर्ष 2019 में उन्हें पद्मश्री के सम्मान से सम्मानित किया।

❖ **चुटनी देवी :–** जनजातीय महिलाओं के सशक्तिकरण, उपेक्षित व वंचित जनजातीय महिलाओं को सामाजिक न्याय दिलाने के लिए निरंतर व्यक्तिगत एवं सांगठनिक स्तर (आदिवासी महिला समति) के माध्यम से प्रयासरत चुटनी देवी सार्थक एवं सक्रिय रूप में जनजातीय महिलाओं को राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ने का प्रयास कर रही हैं। उनके इस प्रशंसनीय प्रयास को प्रोत्साहित करते हुए वर्ष 2021 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री सम्मान से सम्मानित किया। चुटनी देवी जनजातीय महिला सशक्तिकरण के समस्त आयामों, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक न्याय, मानव गरिमा व समाज सुधार जैसे आयामों पर एक साथ कार्य कर रही हैं।

❖ **दयामनी बारला :–** 'Iron Lady of Jharkhand' के उपनाम से मशहूर दयामनी बारला आवश्यकतानुसार एवं परिस्थितिनुसार अपने को विभिन्न भूमिकाओं में प्रस्तुत करती हैं। कभी पर्यावरणविद्, कभी समाज सुधारक, कभी समाजसेवी के रूप में, कभी आन्दोलन तो कभी पत्रकारिता के माध्यम से झारखण्ड के जल, जंगल व जमीन को संरक्षित करने का प्रयास कर रही है ताकि झारखण्ड नाम की सार्थकता निरंतर बनी रहे। दयामनी बारला प्रकृति को जीतने के बजाय प्रकृति के सान्निध्य में जीवन जीने की हिमायती हैं।

राष्ट्र–निर्माण की दिशा में शिक्षा का अत्यंत महत्व है। शिक्षा प्राप्त व्यक्ति में सामाजिक न्याय की सोच, देश की समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता हो। शिक्षा जगत में एक सशक्त हस्ताक्षर के रूप में अपने को स्थापित किया हो तो राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में उस व्यक्ति की भूमिका स्वतः सुनिश्चित होने लगती है और इस दिशा में एक बड़ा नाम है देश के प्रथम आदिवासी महिला कुलपति का पदभार संभालने वाली प्रो0 सोनाक्षरिया मिंज का।

राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में साहित्य का भी बहुत बड़ा योगदान होता है। प्रसिद्ध कवि माखनलाल चतुर्वेदी की रचना 'पुष्प की अभिलाशा' ने इसे कई दफा प्रमाणित किया है। इस दिशा में कवि प्रदीप के रचनाओं को भुलाया नहीं जा सकता है। एक बार संसद भवन के सीढ़ियों से उतरते हुए देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू के पैर लड़खड़ाए और वह गिरने वाले ही थे कि साथ चल रहे राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने उन्हें संभाला। इस घटना पर जब पंडित नेहरू ने रामधारी सिंह दिनकर से कहा कि यदि आज तुम न होते तो मैं गिर ही जाता। इस बात पर प्रतिक्रिया देते हुए रामधारी सिंह दिनकर ने कहा कि "जब–जब देश की राजनीति लड़खड़ाएगी साहित्य उसे सहारा देगा।" अर्थात साहित्य को राजनीति का पथ प्रदर्शक, मार्गदर्शिका समझा जा सकता है। राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में साहित्य की महत्ती भूमिका है। इसी संदर्भ में हम आदिवासी महिला समुदाय के कुछ प्रतिनिधि कवयित्रियों एवं उनके रचनाओं की चर्चा करना चाहेंगे।

समाज के सच को शब्दों में उकेरना आसान नहीं होता, उसे पंक्तियों में सजाना आसान नहीं होता। जिसके हरेक शब्दों में सवाल हो, प्रतिकार हो, दर्द हो, चूभन हो, संवेदना हो आसान नहीं होता। जहाँ शब्द स्वयं में रोते हों, विद्रोह करते हों, हुँकार भरते हो आसान नही होता।

❖ **'निर्मला पुतुल :–** बहुचर्चित संताली लेखिका, कवयित्री और समाजसेवी हिन्दी कविता में एक परिचित नाम है। आदिवासी विमर्श की एक सशक्त हस्ताक्षर है। उनकी कविताओं का अनुवाद विभिन्न भारतीय भाषाओं में हुआ है, जैसे– मराठी, उर्दू, उड़िया, कन्नड़, नागपुरी, पंजाबी, नेपाली एवं अंग्रेजी में हुआ है। उनकी कविताएँ पाठ्य–पुस्तकों में भी शामिल की गई है। विभिन्न विश्वविद्यालयों में उनकी कविताओं पर शोध–प्रबंध लिखे गये हैं। उनके जीवन पर आधारित फिल्म 'बुरू–गारा' को वर्ष 2010 में राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ। वह साहित्य अकादमी के 'साहित्य सम्मान' भारतीय भाषा परिषद के राष्ट्रीय युवा सम्मान, बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान सहित दर्जनाधिक पुरस्कारों एवं सम्मानों से सम्मानित हुई है।

अब मैं नारीवाद को मुखर करती उनकी कविताओं की कुछ पंक्तियों को प्रस्तुत करना चाहुँगा :–

क्या तुम जानते हो
पुरुषों से भिन्न
एक स्त्री का एकांत?
बता सकते हो
सदियों से अपना घर तलाशती
एक बेचैन स्त्री को
उसके घर का पता?
क्या तुम जानते हो
अपनी कल्पना में
किस तरह एक ही समय में
स्वयं को स्थापित और निर्वासित
करती है एक स्त्री?
सपनों में भागती
एक स्त्री का पीछा करते

कभी देखा है तुमने उसे
रिश्तों के कुरूक्षेत्र में
अपने आपसे लड़ते?
तन के भूगोल से परे
एक स्त्री के
मन की गाँठ खोल कर
कभी पढ़ा है, तुमने
उसके भीतर का खौलता इतिहास?
क्या तुम जानते हो
एक स्त्री के समस्त रिश्तों का व्याकरण?
बता सकते हो तुम
एक स्त्री को स्त्री–दृष्टि से देखते
उसके स्त्रीत्व की परिभाषा?
अगर नहीं!
तो फिर जानते क्या हो तुम?
रसोई और बिस्तर के गणित से परे
एक स्त्री के बारे में .....?

स्त्रोत : पुस्तक नगाड़े की तरह बजते शब्द, पृष्ठ संख्या–07,
भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन 2005

पर्यावरणीय संवेदनशीलता प्रस्तुत करती उनकी पंक्तियाँ :–

उतनी दूर मत ब्याहना बाबा!
ऐसा वर नहीं चाहिए हमें
और उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथें ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाए
फसले नहीं उगाई जिन हाथों ने।

आदिवासी विमर्श का एक और सम्मानित नाम है, जसिंता केरकट्टा जिनकी कविताएँ भी पर्यावरण के प्रति जागरूकता एवं सजगता विकसित करती है। प्रस्तुत है उनकी एक कविता (परवाह)

माँ

एक बोझा लकड़ी के लिए
क्यों दिन भर जंगल छानती
पहाड़ लांघती,
देर शाम घर लौटती हो?
माँ कहती है
जंगल छानती
पहाड़ लांघती
दिन भर भटकती हूँ
सिर्फ सूखी लकड़ियों के लिए!
कहीं काट न दूँ कोई जिन्दा पेड़!

दलित विमर्श की तरह आदिवासी विमर्श भी साहित्यिक जगत में अपनी आवाज को सशक्त रूप से रख रही है। आदिवासी समाज की समस्याओं, संवेदनाओं एवं चिंताओं को मार्मिक, हृदयस्पर्शी एवं संवेदनशील शब्दावलियों में प्रस्तुत करते हुए अपने को राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित कर रही है।

आदिवासी समस्याओं, संस्कृतियों एवं संवेदनाओं को लिपिवद्ध करती पश्चिम बंगाल के आदिवासी युवा लेखक पच्चीस वर्षीय बापी टुडू को उनकी रचना 'दुसी' के लिए साहित्य अकादमी युवा पुरस्कार 2023 से सम्मानित होना इसका ज्वलंत प्रमाण है।

राष्ट्र–निर्माण एवं भारत परिवार :– भारत एक परिवार है और भारतीयता ही इसकी पहचान है। राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया इसी भारतीयता की पहचान को समस्त भारत भूमि में स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने का कार्य करती है। भारत रूपी इस परिवार का आदिवासी जनजातीय

महिलाएँ एक अहम् हिस्सा है और इस परिवार के हरेक हिस्से का सशक्त होना ही राष्ट्र–निर्माण है जिनमें जनजातीय महिलाएँ भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

राष्ट्र–निर्माण का सीधा सा अर्थ है, सम्पूर्ण भारत को सम्पूर्ण अर्थों में सम्पूर्ण विविधताओं के साथ सहृदय सम्मान व स्वीकार्यता के साथ एकता के सुत्र में, भारतीयता के सूत्र में पिरोना। प्रसिद्ध समाजशास्त्री योगेश अटल कहते हैं कि ''संस्कृति जीवंत लोगों का जीवंत व्यवहार है।''

भारत में विविध संस्कृति के लोगों का अपनी उस विशिष्ट संस्कृति के प्रति विशेष लगाव होता है, हरेक संस्कृति की कुछ विशिष्टताएँ होती है। हमें प्रयास यह करना है कि भारत के इस सांस्कृतिक विविधता को भारतीय संस्कृति रूपी माला में पिरोना है, जिसमें देश की विविध संस्कृति माला में गुंथे विविध फूलों की भांति भारत माता के गले की शोभा बढ़ा रहे होंगे।

राष्ट्र–निर्माण प्रक्रिया के बाधक तत्व :– जब नाम के बाद सरनेम पूछा जाता है तो यह भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक आदर्शों एवं वैज्ञानिक विश्वासों पर सवाल खड़ा करती है। संविधान शिल्पी डॉ0 भीमराव अम्बेदकर के प्रयासों ने जातियों को कैटेगरी में बदल दिया है। अब जब पूरा नाम बताने के बाद केटेगरी पूछा जाता है तो हमें इस दिशा में प्रयास करना होगा कि अम्बेदकर के अधूरे सपने को पूरा कैसे किया जाय। केटगरी की विविधता जेनरल, एस.टी.एस.सी., ओ.बी.सी. को समाप्त कैसे किया जाय।

हमें वैज्ञानिकता, संवैधानिकता, लोकतांत्रिक मान्यता व समानता की तरफ बढ़ना होगा। हमें मनुस्मृति या शरियत की तरफ लौटने के बजाय संविधान की तरफ बढ़ना होगा। राष्ट्र–निर्माण की दिशा में जितना खतरनाक ब्रह्मणवाद है, उतना ही खतरनाक दलितवाद, एस.टी. वाद या फिर ओ.बी.सी. वाद है। राष्ट्र–निर्माण के पथ से इन अवरोधों को समाप्त करते हुए वैज्ञानिकता, लोकतांत्रिक आदर्शों एवं संवैधानिक मूल्यों के आधार पर नवीन भारत का निर्माण कर संविधान सभा के स्वर्णिम भारत के सपने को साकार किया जा सकता है। जहाँ व्यक्ति की एकमात्र पहचान भारतीयता हो, एकमात्र धार्मिक ग्रन्थ संविधान हो और देश के स्वतंत्रता संग्राम एवं संविधान सभा में शामिल वीर–वीरांगनायें देवी–देवता हो। ऐसी स्थिति में ही राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया एक संस्थागत रूप ले सकती है।

निष्कर्ष :– झारखण्ड में 32 जनजातियाँ है, जिनमें कुछ जनजातियाँ है जैसे सौरिया पहाड़िया, असुर, विरहोर आदि जो आज भी कमोवेश आदिम अवस्था में जीवन–यापन कर रहे हैं, जिनमें राष्ट्र–निर्माण की संकल्पना तो दूर अपने देश (भारत) से भी परिचित नहीं है। भारत को जाने–समझे बगैर ये लोग भारत–निर्माण में अपना योगदान कैसे दे सकते है? आप जब झारखण्ड के सड़कों से गुजरेंगे तो आप जनजातीय महिलाओं को सड़क किनारे हड़िया, पॉचॉय (स्थानीय शराब) ताड़ी बेचते पायेगें। शराब निर्माण, क्रय–विक्रय की यह प्रणाली आदिवासी जनजातीय महिलाओं के सम्मान व अस्मिता पर चोट करने के साथ–साथ समाज व राष्ट्र को भी कमजोर करती है।

राष्ट्र–निर्माण के जिस परिप्रेक्ष्य में आदिवासी महिलाओं के जिस भूमिका को परिभाषित किया जाता है। उस परिप्रेक्ष्य में आदिवासी महिलाओं की संख्या गिनती के हैं। गिनती के संख्या के आधार पर राष्ट्र–निर्माण में आदिवासी महिलाओं की भूमिका का सामान्यीकरण नहीं किया जा सकता है तो फिर सवाल उठता है कि आदिवासी जनजातीय महिला समुदाय के बहुसंख्यक आबादी को किस प्रकार राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ा जाए। इस दिशा में पहल करने के लिए हमें वेरियर वेल्विन की किताब 'The Philosophy of NEFA' के दर्शन को समझना होगा जिसे आदिवासियों का धर्मग्रन्थ कहा जाता है। नेहरू द्वारा सुझाए गए आदिवासी पंचशील सिद्धाँत को समझते हुए उसके अमलीकरण की दिशा में कार्य करना होगा। संविधान की पांचवी एवं छठी अनुसूची के व्यवहारिक अमलीकरण एवं PESA Act. 1996 को पूरे मनोवेग से क्रियान्वयन की दिशा में कार्य करना होगा।

राष्ट्र–निर्माण की प्रक्रिया में समस्त आदिवासी जनजातीय महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित कर हम राष्ट्र–निर्माण प्रक्रिया को सफल, समावेशी, लोकतांत्रिक व सहभागी बना सकते हैं। तभी प्रथम आदिवासी महिला राष्ट्रपति, कुलपति, सांसद, कवयित्री आदि सम्बोधन निरर्थक और अप्रसांगिक हो जाऐंगे। इन पदों पर आसीन जनजातीय महिलाओं के प्रति किसी प्रकार का कृपा भाव या आरक्षण का तर्क सार्थक व प्रासंगिक नहीं होगा। बल्कि हम विमर्श इस तथ्य को लेकर करेंगे कि इन पदों पर इन्हें आने में इतना वक्त क्यों लगा। फिर हम व्यवस्था के उन समस्याओं, नीतियों के खामियों को चिह्नित कर उसका समाधान करने की कोशिश करेंगे साथ ही यह जानने की भी कोशिश करेंगे कि आजाद भारत की आजादी इन समुदायों तक पहुँचने में, शिक्षित भारत की शिक्षा, अमीर भारत की अमीरी इन समुदायों तक पहुँचने में देरी क्यों हो रही? इन समस्याओं का स्थायी समाधान ढूँढने की कोशिश करेंगे ताकि एक स्वर्णिम, समावेशी, सहिष्णु, श्रेष्ठ, समृद्ध, अखण्ड, अद्भूत व अद्वितीय भारत का निर्माण किया जा सके।

राष्ट्र निर्माण की भावना शून्य में जन्म नहीं लेती हैं। शून्यता न तो राज्य में होनी चाहिए और न ही व्यक्ति में। इस देश ने मेरे निर्माण में क्या–क्या दिया है, इस सवाल के साथ हमें अपने आप से यह भी पूछना चाहिए कि मैंने देश निर्माण में क्या–क्या और कितना योगदान दिया है। इन दोनों सवालों का सकारात्मक, मात्रात्मक एवं गुणात्मक उत्तर ही राष्ट्र निर्माण की भावना को सार्थक एवं सुपंष्ट करेगा एवं राज्य निर्माण एवं राष्ट्र निर्माण के बीच की दूरी को समाप्त करेगा। आवश्यकता इस बात की है कि हमें जनजातीय विकास को भारत विकास से जोड़कर देखना होगा। समस्त जनजातीय समाज को सक्रिय नागरिकता की परिधि में शामिल करना होगा। भारत के संपूर्ण लोकतंत्र की परिभाषा में समस्त जनजातीय समाज की सक्रिय एवं जीवंत सहभागिता सुनिश्चित करनी होगी। लुप्तप्राय जनजातियों को सुरक्षा की, स्वास्थ्य की, विकास की संजीवनी देनी होगी।

संदर्भ सूची :–

1. कुमार, विजय : अंधेरे समय में विचार, संवाद प्रकाशन, मेरठ–25004,2006.
2. चतुर्वेदी, जगदीश्वर : साम्प्रदायिकता, आतंकवाद और जन्माध्यम, अनामिका पब्लिशर्स और डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0 नई दिल्ली–11002, 2005
3. उपाध्याय, पंडित दीनदयाल एकात्म मानव दर्शन, सुरूचि प्रकाशन, नई दिल्ली, 110055, 2014
4. मल्होत्रा, राजीव, विभिन्नता : पाश्चात्य सार्वभौमिक भारतीय चुनौती, हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया, 201301, 2013
5. राजकिशोर (संपादक) : भारत का राजनीतिक संकट, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली–2012
6. रॉय, अरून्धति : आहत देश, राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, दिल्ली – 110002, 2014
7. मुण्डा, डॉ0 रामदयाल : आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, प्रकाशन संस्थान नई दिल्ली–110002, 2014
8. सिन्हा, अनुज कुमार : झारखंड आन्दोलन का दस्तावेज : शोषण, संघर्ष और शहादत, प्रभात पेपरबैक्स, नई दिल्ली–110002, 2013
9. किमलिका, विल : समकालीन राजनीति दर्शन एक परिचय, पियर्सन, सैक्टर – 62 नोयडा–201309 (यू0पी0), 2011.
10. भार्गव, राजीव : आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत एक परिचय, पियर्सन सेक्टर–62 नोयडा 201309 (यू0पी0), 2011.
11. योजना, अगस्त, 2013 – समावेशी लोकतंत्र
12. तिर्की, प्रभाकर,''झारखण्ड : आदिवासी विकास का सच'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2015.
13. चलम, के. एस.,''आर्थिक सुधार और सामाजिक अपवर्जनः भारत में उपेक्षित समूहों पर उदारीकरण का प्रभाव'', SAGF Publications Pvt. Ltd., New Delhi-110002, 2008.
14. हेमंत, झारखण्ड, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली–110002, 2008.
15. रघुवंशी, कमलेश, ''दैनिक जागरण और कितना वक्त चाहिए झारखण्ड को?'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली–110002, 2013.
16. तलवार, वीरभगत, ''झारखण्ड के आदिवासियों के बीच'', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली–110003, 2012.
17. दूबे, श्यामाचरण, ''विकास का समाजशास्त्र'', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2010.
18. दूबे, श्यामाचरण, ''परम्परा और परिवर्तन'', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 2008.
19. सिंह, शिवबहाल, ''विकास का समाजशास्त्र'', रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर, 2010.